सुन्दर साथजी ए गुन देखो

सुन्दर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएँ किए अलेखे।।टेक।।

क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए।
अरस-परस यो भई बज्र में, सो मेरे धनिएँ दई छुटकाए।।

कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।
सो धनिएँ बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।।

बिन जाने बिन पेहेचाने कई सुख, ऐसे धनिएँ हमको देखाए।
अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदे चढ़ आए।।

अवगुन अलेखें हम किए पिउसों, तापर ऐसे धनी के गुन।
कई विध सुख ऐसे धनीय के, क्यों कर कहूं जुबां इन।।

इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पिउ।
तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जिउ।।

महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए।।